जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

कोटा

Rashtradoot

फोनः- 2386031, 2386032 फैक्सः- 0744-2386033 वर्षः 48 संख्याः 34 प्रभात कोटा, गुरुवार 17 नवम्बर, 2022 कोटा/24/2012-14 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

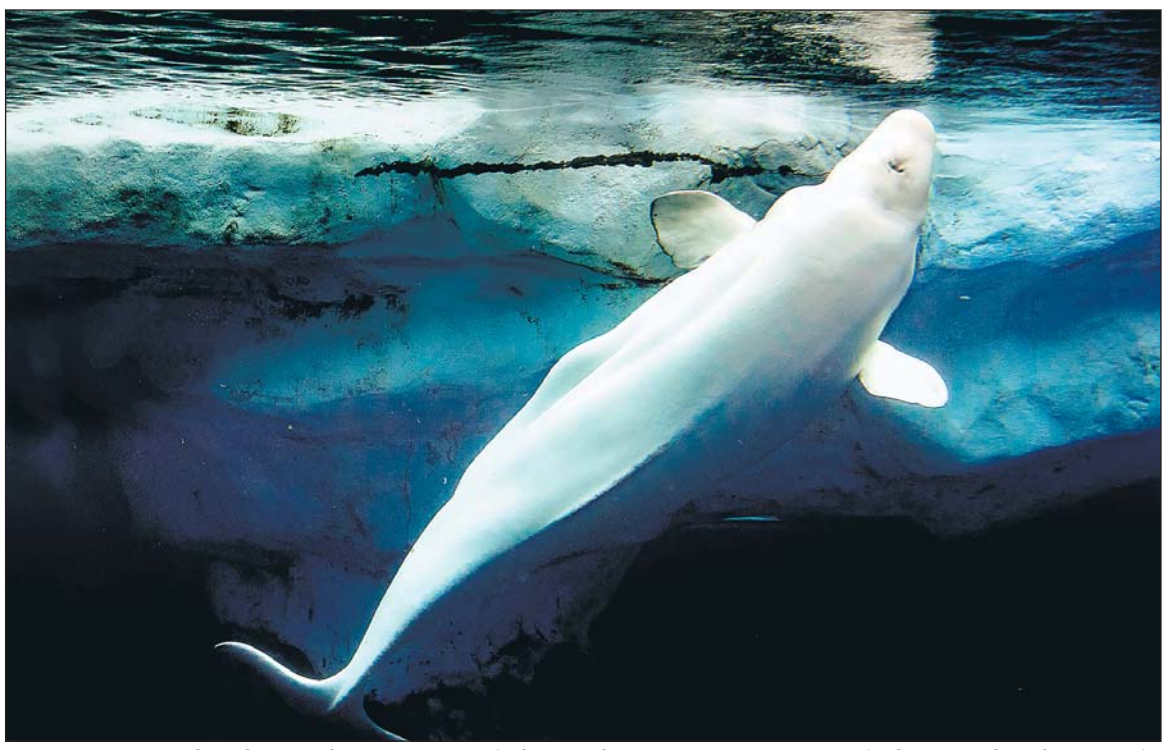

हार्बर ब्रांच ओशनो ग्राफिक रिसर्च इंस्टीट्यूट के प्रोफेसर ग्रैगरी ओ कोरी- क्रो को सन् 1998 में सुदूर कैनेडियन आर्कटिक द्वीप, सॉमरसैट जाने का अवसर मिला, उनके साथ दो जीव वैज्ञानिक भी थे। ये लोग देखना चाहते थे कि बलूगा व्हेल द्वीप पर आएंगी या नहीं? कुछ दिन बाद तकरीबन 1500 व्हेल का झुंड कोलाहल करते हुए सॉमरसैट के तट पर पहुँच गया। इस अनुभव ने क्रो को इतना प्रभावित किया कि 20 साल तक उन्होंने बलूगा व्हेल माइग्रेशन का अध्ययन किया। वैज्ञानिक जर्नल, ''प्लॉस वन'' में छपे उनके शोध में निष्कर्ष निकाला गया है कि, नॉर्थ पैसिफिक बलूगा व्हेल गर्मी के मौसम में आर्कटिक के पार अपनी समर लोकेशन्स तक पहुँचने के लिए, दिशा ज्ञान हेतु सशक्त और पीढ़ी गत सांस्कृतिक सम्बंधों पर निर्भर करती हैं। शोधकर्ताओं ने पाया कि बलूगा बेरिंग सी से होकर गुज़रती हैं तथा अलास्का के पश्चिमी और दक्षिणी तट और रुस के पूर्वी तट पर सर्दियाँ बिताती हैं। बलूगा व्हेल वर्ष दर वर्ष इसी पैटर्न का अनुसरण करती हैं और केवल उसी सूरत में पैटर्न बदलती हैं जब सी आइस (समुद्री बर्फ) की स्थिति औसत से काफी फर्क हो। क्रो कहते हैं कि ''इस अविश्वसनीय, लंबी व जटिल वार्षिक यात्रा में वो निकट सम्बंधियों व समूह के सदस्यों से जीवन भर का रिश्ता भी जोड़ लेती हैं, जिससे उन्हें चुनौतियों का सामना करने में मदद मिलती है तथा जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी सफलता मिलती है, चाहे वह प्रजनन, भोजन या निर्मोचन हो। इस संस्कृति में कुछ सबक पालन पोषण के दौरान सीखे जाते हैं, बिल्कुल इंसानों की तरह। बलूगा के बच्चे दो से तीन साल तक मां के साथ रहते हैं, और इसी दौरान बहुत कुछ सीखते हैं।'' ये निष्कर्ष आश्चर्यजनक हैं, क्योंकि बलूगा व्हेल के समूह में उतना गहरा निकट सम्बंध नहीं होता, जो किलर व्हेल के समूहों में देखा जाता है। यह शोध अमेरिका, कैनेडा और रुस के स्थानीय लोगों की पारम्परिक जानकारी की भी पुष्टि करता है। यहां के लोग बहुत लम्बे समय से जानते थे कि बलूगा हर साल एक ही जगह लौटती हैं। ज्यादा से ज्यादा शोधकर्ता अब व्हेल के बारे में इन लोगों की पारम्परिक जानकारी पर भरोसा करने लगे हैं। लेकिन क्रो अब यह सोचकर चिंतित हैं कि, कई पीढ़ियों की यह सांस्कृतिक शिक्षा क्लाइमेट चेंज के कारण हो रहे बदलावों से अनुकूलन करने में बलूगा के लिए मददगार होगी या नहीं।

माकन ने राजस्थान के प्रभारी पद से इस्तीफा 8 नवम्बर को भेज दिया

इस्तीफे का तत्कालिक कारण था, गहलोत द्वारा धर्मेन्द्र राठौड़ को राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा का राजस्थान में इंचार्ज बनाना। माकन के इस्तीफे के बाद उसी दिन पायलट राहुल गांधी से मिले

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 नवम्बर। अजय माकन क्रीज से बाहर निकले और बॉल पर सीधे छक्का लगा दिया। इस प्रकार राजस्थान कांग्रेस में निर्णय लेने की क्षमता के अभाव तथा हिचकिचाहट की स्थिति को फिर से चर्चा में ला दिया।

अजय माकन ने ए.आई.सी.सी. महासचिव तथा राजस्थान-प्रभारी पद से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने अपना इस्तीफा 8 नवम्बर को मल्लिकार्जुन खड़गे के पास भेज दिया था लेकिन, सूत्रों के अनुसार, इसे गुप्त रखा गया था। सूत्रों का कहना है कि खड़गे ने माकन से कह दिया था कि वे अपने पद पर बने रहें और उन्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं है, सब कुछ ठीक हो जायेगा।

- माकन का तर्क था कि, वे (माकन) यात्रा के दौरान प्रभारी के रूप में उस व्यक्ति के साथ-साथ चलना पड़ेगा, जिसके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्यवाही पैंडिंग है।
- जैसा कि विदित ही है, माकन ने सोनिया गांधी, तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष, को प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट लिखा था कि, गहलोत के ''निर्देश'' पर अस्सी विधायकों ने विद्रोह करते हुए, कांग्रेस द्वारा भेजे पर्यवेक्षकों द्वारा आहूत सी.एल.पी. की मीटिंग का बहिष्कार किया। इस निर्देश की अनुपालना व क्रियान्विति महेश जोशी, शांति धारीवाल व धर्मेन्द्र राठौड़ ने करवाई थी। रिपोर्ट में कांग्रेस के इन तीन नेताओं के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्यवाही की सिफारिश की गयी थी।
- माकन राहुल गांधी के अति नज़दीक व विश्वासी व्यक्ति हैं, अतः यह माना जा सकता है कि, इस्तीफा देने का निर्णय राहुल गांधी को विश्वास में लेकर लिया गया है और इस्तीफे के बाद उसी दिन पायलट का राहुल गांधी से मिलना भी महत्व रखता है।
- माकन का इस्तीफा, कांग्रेस के विधायकों की बगावत के घटनाक्रम पर लीपा-पोती करने के प्रयास से तंग आकर मुद्दे को हाई-लाइट करने की कोशिश है।

सूत्रों ने कहा कि माकन ने अपना इस्तीफा देने का चरम कदम खड़गे तथा कांग्रेस नेतृत्व पर यह दबाव डालने के लिये उठाया था कि राजस्थान में नेतृत्व के मुद्दे पर निर्णय लिया जाये।

सूत्रों ने कहा कि माकन के एकाएक दिये गये इस्तीफे का कारण अशोक गहलोत का वह निर्णय था, जिसके अन्तर्गत उन्होंने धर्मेन्द्र राठौड़ को राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा, जिन दिनों वह राजस्थान में होगी, का प्रभारी नियुक्त कर दिया था।

मुद्दे की बात यह है कि माकन, राठौड़ तथा अन्य लोगों के साथ कैसे चलेंगे, जबकि उनके खिलाफ अभी तक अनुशासनात्मक कार्यवाही नहीं हुई है।

सोनिया गांधी को वह रिपोर्ट सौंपने वाले अजय माकन ही तो थे, जिसमें उन घटनाओं का विस्तृत ब्यौरा था, जो जयपुर में घटित हुई थी तथा जब गहलोत को निर्देशन में विधायक बगावत पर उतर आये थे, तथा केन्द्रीय पर्यवेक्षकों द्वारा बुलाई गई सी.एल.पी. मीटिंग में आने से इंकार कर दिया था।

अजय माकन ने जो रिपोर्ट सोनिया गांधी को सौंपी थी, उसमें उन्होंने कहा था कि महेश जोशी, धारीवाल एवं धर्मेन्द्र राठौड़ के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्यवाही होनी चाहिये।

इसके बावजूद, इन तीनों के खिलाफ अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हुई है तथा वे गहलोत के कान और आँख बने हुये हैं।

इसके अलावा, राजस्थान के मुद्दे पर चर्चा करने के लिये कोई सी.एल.पी. मीटिंग नहीं बुलाई गई है, क्योंकि पहली मीटिंग तो, विधायकों के न आने के कारण, निरस्त कर दी गई थी।

मुद्दा यह बनाया गया है कि 80

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

गुजरात में 40 वर्तमान विधायकों के टिकट कटने से कर्नाटक में झुरझुरी

- भाजपा विधायकों की चिंता व बैचेनी इसलिये और बढ़ गयी, क्योंकि कर्नाटक से भाजपा के राज्यसभा सदस्य लहर सिंह सिरोया ने टिप्पणी कर दी की, वरिष्ठ विधायकों को स्वयं ही चुनाव की दौड़ से बाहर हो जाना चाहिये।
- गुजरात में ''एन्टी इनकम्बैन्सी'' को मात देने के लिये, वर्तमान विधायकों को चुनाव न लड़ाकर नये चेहरों को चुनाव मैदान में उतारने की रणनीति अपनायी है भाजपा ने।
- पर कर्नाटक के विधायक एक-दूसरे को यह समझा रहे हैं कि, हर राज्य के लिये पार्टी अलग-अलग चुनावी रणनीति बनाती है। अतः जरूरी नहीं है कि, गुजरात का फॉर्मूला कर्नाटक में भी लागू हो।

-लक्ष्मण वेंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 नवम्बर। गुजरात विधानसभा चुनावों के लिये भाजपा उम्मीदवारों की सूची से कर्नाटक के भाजपा विधायकों को खतरे की घंटी सुनाई देने लगी हैं। उन्हें यह डर सताने लगा है कि नये तथा, जहाँ तक हो सकता है, वहाँ तक, युवा उम्मीदवारों के रास्ता बनाने के लिये कहीं उनके नाम भी गायब नहीं हो जायेंगे।

गुजरात में, कई वरिष्ठ विधायकों, मंत्रियों तथा एक पूर्व मुख्यमंत्री तक ने चुनावी दौड़ से बाहर रहने की इच्छा बाकायदा प्रकट की है, लेकिन ऐसी इच्छा प्रकट करने के लिए उन्हे तैयार किया गया है। इसके अलावा, कई विधायकों को, उनके जीतने की कम संभावना के कारण, टिकट देने के लिए मना कर दिया गया था। सूत्रों ने कहा कि सत्ता-विरोधी लहर को बेअसर करने का एक रास्ता यही था कि वर्तमान विधायकों को पुरानी सीटों से ना खड़ा किया जाए तथा उन्हें या तो आसपास की किसी अन्य सीट से खड़ा किया जाये या उनके स्थान पर नये एवं युवा चेहरे लाये जायें।

गुजरात में वस्तुतः यही हुआ है, वहाँ करीब 40 मौजूदा विधायकों को टिकट नहीं दिये गये हैं। भाजपा की इस रीति-नीति से गुजरात से बहुत दूर स्थित कर्नाटक के भाजपा विधायकों में खतरे की घंटी बजना शुरु हो गई हैं, जहाँ चंद महीनों में ही चुनाव होने हैं।

प्रसंगवश बता दें कि कर्नाटक से भाजपा के राज्यसभा सदस्य लहर सिंह सिरोया की एक टिप्पणी से कर्नाटक के पार्टी नेताओं के मन में शंका पैदा कर दी है। अपनी इस टिप्पणी में उन्होंने कहा था कि वरिष्ठ विधायकों को स्वेच्छा से ही चुनावी राजनीति से बाहर हो जाना चाहिये।

एक मोटे हिसाब के अनुसार, कर्नाटक में 20 से अधिक भाजपा विधायकों की उम्र 65 वर्ष से ज्यादा है। बताया जाता है कि उनमें से कुछ लोग अगले विधानसभा चुनावों में फिर से पर्चा भरने की संभावनाओं को लेकर चिंतित हैं।

लेकिन उनको थोड़ी-बहुत राहत बस इसी तथ्य से मिल सकती है कि जहाँ तक राजनीति का संबंध है, एक आकार की चीज सभी के फिट नहीं आती है। हो सकता है कि जो चीज गुजरात में काम कर रही है, वह अन्य किसी राज्य में भी काम करे। इसके अलावा यह भी संभव है कि पार्टी नेतृत्व वहाँ के लिये कोई भिन्न रणनीति अपनाये।

इस समय की स्थिति यह है कि सफल भारत जोड़ो यात्रा से उत्साहित कांग्रेस से भाजपा को गंभीर चुनौती मिल रही है। ज्ञातव्य है कि यह यात्रा कुछ समय पहले ही कर्नाटक से गुजरी थी।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पेंशनर्स के लिए डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट मुहिम

- सरकार ने पेंशनर्स के लिए डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट मुहिम छेड़ी है, अब उन्हें पेंशन के लिए जिंदा रहने का सर्टिफिकेट देने के लिए हर साल लाइन में नहीं लगना पड़ेगा।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 नवम्बर। सरकार ने केन्द्रीय सरकार के पेंशनरों के लिये जीवित होने के डिजिटल प्रमाण पत्र (डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट) के प्रचलन को गति देने के लिये एक राष्ट्रव्यापी अभियान छेड़ा है ताकि वे हर वर्ष लम्बी कतारों में खड़े रहने की तकलीफ से बच सकें। 1 अक्टूबर से अब तक 57,13,609 पेंशनर प्रमाण पत्र जमा करा चुके हैं। इस प्रयोजन के लिये चेहरे के सत्यापन की तकनीक (फेस ऑथेन्टिकेशन टेक्नॉलजी) राज्य मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह ने गत वर्ष नवम्बर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बाली शिखर सम्मेलन में भारत के नारे का बोलबाला रहा है

भारत का नारा था, ''आज युद्ध का युग नहीं है''

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 नवम्बर। दुनिया की 20 अग्रणी आर्थिक शक्तियों यानी कि जी-20 के बाली शिखर सम्मेलन की समाप्ति पर लगता है कि भारत को एक भारी कूटनीतिक मान्यता मिली है।

इण्डोनेशिया के बाली में हुए शिखर सम्मेलन में भारतीय भावनाएं गुंजाएमान हुई और जी-20 नेताओं की मीटिंग का एक संदेश था।

''आज का युग युद्ध का नहीं है।'' इसे भारत और चीन के बीच के एक शैडो डिप्लोमैटिक वॉर के रूप में देखा जा सकता है। समस्याएं सुलझाने में ताकत के उपयोग की वैधता पर भारत और चीन के विपरीत दृष्टिकोण है।

- इस नारे की गूंज का महत्व यह है कि, चीन की घोषित नीति की, राजनीतिक मतभेदों व समस्याओं के समाधान के लिये ताकत का उपयोग जायज है, को शिखर सम्मेलन ने नहीं अपनाया।
- भारत की, रूस व अमेरिका तथा अन्य यूरोपीय देशों के बीच सेतु का काम करने वाली नीति का महत्व समझ में आया सभी देशों को, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर।

बाली शिखर सम्मेलन के समापन विवरण में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का वह बयान भी शामिल है जो शंघाई को-ऑपरेशन ऑर्गनाइजेशन के समरकंद सम्मेलन के दौरान रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ हुई बातचीत में उन्होंने दिया था।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

गुजरात में कांग्रेस प्रचारकों की लिस्ट से थरूर गायब?

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 नवम्बर। शशि थरुर गुजरात में कांग्रेस के प्रचार-अभियान से बाहर रखे गये। यह बात निश्चित रूप से चौंकाने वाली है कि पार्टी के स्टार-प्रचारकों की सूची में उनका नाम नहीं है। इससे ये अटकलें प्रबल हो रही हैं कि पार्टी नेतृत्व उनकी उपेक्षा कर रहा है। थरुर ने 2014 तथा 2019 के लोकसभा चुनावों के साथ ही, केरल के चुनावों तथा अन्य उपचुनावों में प्रचार किया था। वे शुद्ध उच्चारण करने वाले प्रभावी वक्ता के रूप में जाने जाते हैं। पिछले वर्षों में, उनकी हिन्दी भाषण कला में उल्लेखनीय निखार आया है।

- इसलिए राजनैतिक हल्कों में पूछा जा रहा है कि, क्या शशि थरूर को मल्लिकार्जुन खड़गे को चुनौती देने की सजा दी जा रही है, जिन्हें अधिकृत प्रत्याशी माना जा रहा था।

पार्टी अध्यक्ष पद के लिये हाल ही हुये चुनाव में उनका प्रदर्शन अपेक्षा से

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

महिला के बचाव में ''ट्रोलर्स'' पर भड़के थरूर

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 नवम्बर। सोशल मीडिया पर एक महिला की गरिमा का हनन करना बेहद आम हो गया ऐसी ही एक घटना के मुद्दे पर उन ट्रोलर्स को कांग्रेस नेता शशि थरुर ने जमकर फटकारा, जिनकी वजह से एक महिला को थरुर के साथ अपनी फोटो, जो उसने सोशल मीडिया पर शेयर की थी, वापस लेनी पड़ी थी।

- थरूर के साथ फोटो पोस्ट कर ट्रोलर्स के निशाने पर आई महिला के पक्ष में शशि थरूर मजबूती से खड़े हुए और ट्रोलर्स को आड़े हाथों लिया।

शशि थरुर ने उक्त महिला की पोस्ट को शेयर करते हुए लिखा, कि ट्रोलर्स

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

डैमोक्रैटिक पार्टी ने सीनेट पर अपनी पकड़ बरकरार रखी

इस खबर से डैमोक्रैटिक पार्टी का मनोबल तो ऊंचा हुआ, क्योंकि चुनाव विशेषज्ञ मान रहे थे कि, रिपब्लिकन पार्टी की एक तरफा जीत होगी

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 नवम्बर। अमेरिका में गत सप्ताह हुए मध्यावधि चुनावों में अपने मजबूत प्रदर्शन को लेकर डैमोक्रेट्स खुशियां मना रहे हैं, लेकिन राष्ट्रपति जो बाइडन ऐसा नहीं कर रहे हैं। हाल ही सम्पन्न चुनाव संकेत देते हैं कि बाइडन को अमेरिका की जनता का विश्वास जीतने के लिए अभी बहुत कुछ करने की जरूरत है।

इसमें कोई संशय नहीं कि रिपब्लिकन्स का प्रमुख रंग ''रैड वेव'' कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। इस लहर के मंद होने की वजह से डैमोक्रेट्स सीनेट पर नियंत्रण बरकरार रखने में सफल रहे।

- पर विडम्बना यह है कि, इस उत्साहवर्धक खबर के बावजूद राष्ट्रपति बाइडन का ''डिप्रेशन'' दूर नहीं हुआ।
- कारण यह है कि, डैमोक्रैटिक जीत के बावजूद, डैमोक्रैटिक पार्टी द्वारा निर्वाचित राष्ट्रपति बाइडन की व्यक्तिगत लोकप्रियता में लगातार कमी आने का क्रम जारी है।
- बाइडन की अलोकप्रियता ट्रम्प व ओबामा के, राष्ट्रपति शासन काल के समानान्तर दौर में आंकी गई अलोकप्रियता से कहीं ज्यादा है।

रिपब्लिकन्स निराश थे, क्योंकि उन्हें उम्मीद थी कि वे बाइडन की अलोकप्रियता को भुना लेंगे। वे अगस्त 2021 में बाइडन को मिली नकारात्मक अप्रूवल को लेकर रिपब्लिकन्स उत्साहित थे, लेकिन उनकी उम्मीदों पर पानी फिर गया। क्योंकि गत 9 और 10 नवम्बर को किए गए ''ए बिग विलेज सर्वे'' ने भी राष्ट्रपति को माइनस 10.5 की नैट अप्रूवल रेटिंग दी।

न्यूज़वीक की एक रिपोर्ट के अनुसार लिंग, जाति, शिक्षा और आयु पर आधारित अमेरिका 1006 वयस्कों पर हुए सर्वे में पाया गया कि सिर्फ 41.4 प्रतिशत अमेरिकन्स ने ही बाइडन के प्रदर्शन को सराहा, जबकि 51.9 प्रतिशत ने उसे अस्वीकृत किया और शेष ने कहा कि उन्हें नहीं मालूम।

पल्स ओपिनियन रिसर्च फोर रासमुसन रिपोर्ट्स द्वारा किए गए एक अलग सर्वेक्षण में बाइडन माइनस ऐट अप्रूवल रेटिंग मानी गई।

गत 9 और 13 नवम्बर को 15 सौ लोगों पर किए गए ''लाइकली वोटर्स''

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)